RAJPUT TUTORIALS

छत्तीसगढ़ का इतिहास – ब्रिटिश शासन से जंगल सत्याग्रह तक

Name : ..... Date : ...../...../.....

❖ छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश शासन (1854 – 1947 ई.)

- ✓ 13 मार्च, 1854 को नागपुर के साथ छत्तीसगढ़ का विलय ब्रिटिश शासन में किया गया ।
- ✓ नागपुर कमीश्नर – मेन्सल
- ✓ छत्तीसगढ़ डिप्टी कमीश्नर – चार्ल्स सी. इलियट तथा दो सहायक कमीश्नर गोपाल राव–बिलासपुर एवं मोहिबुल हसन–रायपुर
- ✓ 1 फरवरी, 1855 को छत्तीसगढ़ के अंतिम जिलेदार गोपाल राव ने छत्तीसगढ़ का शासन चार्ल्स सी. इलियट को सौंपा।

तहसीलदारी व्यवस्था का आरंभ –

- ✓ डिप्टी कमीश्नर चार्ल्स सी. इलियट ने तहसीलदारी व्यवस्था का सूत्रपात किया।
- ✓ छत्तीसगढ़ जिले में 3 तहसीलों का निर्माण किया गया – 1. रायपुर, 2. रतनपुर, 3. धमतरी
- ✓ तहसील का प्रमुख, तहसीलदार कहलाया। परगनों (12 परगना) का पुर्नगठन करके उसे तहसीलों के अंतर्गत रखा गया। कमाविंसदार का पद समाप्त कर उसके स्थान पर नायब तहसीलदार का पद सृजित किया गया।
- ✓ तहसीलदार (₹ 150 वेतन) तथा नायब तहसीलदार (₹ 50 वेतन) का पद भारतीयों के लिए सुरक्षित किया गया।
- ✓ तहसीलदार, डिप्टी कमीश्नर के अंतर्गत रहकर कार्य करते थे।
- ✓ 1 फरवरी, 1857 – छत्तीसगढ़ जिले में तहसीलों का पुनर्गठन
  - ↓ तहसीलों की संख्या 3 से 5 की गयी – 1. रायपुर, 2. धमतरी, 3. रतनपुर, 4. धमधा, 5. नवागढ़
- ✓ 8 माह बाद – धमधा के स्थान पर दुर्ग को तहसील बनाया गया।
- ✓ राजस्व की दृष्टि से संपूर्ण क्षेत्रों को तीन भागों में बांटा गया था–
  1. खालसा क्षेत्र, 2. जमींदारी क्षेत्र 3. ताहुतदारी क्षेत्र
- ✓ 1854 के पूर्व छत्तीसगढ़ में आय के प्रमुख स्त्रोत थे–
  1. भू–राजस्व, 2. आबकारी 3. कलाली 4. टकोली 5. पंसारी सेवाय
  6. दीगर सेवाय
- ✓ 1 जून, 1856 से छत्तीसगढ़ के आय को चार मदों में बांटा गया–
  1. भू–राजस्व 2. आबकारी 3. सायर 4. पंडरी
- ✓ अंग्रेजों में राजस्व वर्ष 1 मई से 30 अप्रैल तक निर्धारित किया था।
- ✓ जनवरी, 1858 – पुलिस मेनुअल लागू किया गया जिसमें पुलिस के कर्तव्य एवं अनुशासन का विस्तृत ब्यौरा था।
- ✓ 2 नवंबर, 1861 – मध्यप्रांत का गठन – नागपुर और उसके अधीनस्थ क्षेत्रों को मिलाकर एक केन्द्रीय क्षेत्र का गठन किया गया।
- ✓ रायपुर, बिलासपुर और संबलपुर तीन नए जिले बनाए गए।
- ✓ 1862 – छत्तीसगढ़ का स्वतंत्र संभाग का दर्जा दिया गया।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

- ✓ रायपुर तथा बिलासपुर में दो डिप्टी कमीश्नर रखे गए।
- ✓ 1905 – भौगोलिक पुनर्गठन एवं प्रशासनिक परिवर्तन।
- ✓ संबलपुर जिले को बंगाल प्रांत के ओडिशा में मिला दिया गया तथा उसके बदले बिहार की 5 रियासतें चांगभखार, कोरिया, सरगुजा, उदयपुर तथा जशपुर को मध्यप्रांत में शामिल किया गया।
- ✓ इस व्यवस्था के कारण छत्तीसगढ़ के प्रशासनिक ढांचे में जो नवीन परिवर्तन आया उसके अनुसार यहाँ तीन जिले रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग निर्मित किए गए।

1857 की क्रांति एवं छत्तीसगढ़ में उसका प्रभाव

1. सोहागपुर में संघर्ष

- 15 अगस्त, 1857
- गुरूरसिंह, रणमंतसिंह और संबलपुर के कुछ अन्य जमीदारों के नेतृत्व में विद्रोही एकत्रित हुए।
- नेता– सतारा के राजा का भूतपूर्व वकील रंगाजी बापू
- दमनकर्ता– रायपुर का डिप्टी कमीश्नर चार्ल्स सी. इलियट
- विद्रोह असफल हुआ।

2. सोनाखान का विद्रोह (वीरनारायण सिंह बिंझवार)

- कलचुरियों के समय से कर मुक्त जमीदारी– सोनाखान
- सोनाखान के अंतर्गत 12 गांव आते थे।
- सोनाखान के जमीदार– रामराजे → रामराय → वीरनारायण सिंह → गोविंद सिंह
- 1856 में– सोनाखान क्षेत्र में भीषण अकाल पड़ा
- अगस्त, 1856– वीरनारायण सिंह के द्वारा कसडोल के व्यापारी माखन बनिया के अनाज का गोदाम लूटा गया तथा जनता में बांटा गया।
  – घटना की जानकारी डिप्टी कमीश्नर को दी गयी।
- 24 अगस्त, 1856/24 अक्टूबर 1856– वीरनारायण सिंह को गिरफ्तार करके रायपुर जेल भेजा गया।
- 10 अगस्त 1857– भारत में 1857 की क्रांति शुरू
  ↓
  इसकी जानकारी वीरनारायण सिंह को मिलती है।
- 20 अगस्त, 1857– रायपुर जेल से वीरनारायण सिंह भाग निकलने में कामयाब होते हैं।
- सोनाखान पहूंचकर वहां अपने नेतृत्व में 500 सैनिकों को एकत्रित करते हैं।
- कैप्टन स्मिथ के नेतृत्व में सेना की एक टुकडी सोनाखान के लिए रवाना होती है।
- 1 दिसम्बर, 1857– देवरी के जमीदार महाराज साय के सहयोग से कैप्टन स्मिथ, सोनाखान में प्रवेश करता है।
  – कटंगी के जमीदार का भी साथ मिला कैप्टन स्मिथ को
- 2 दिसम्बर, 1857– वीरनारायण सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया।

A. 10 दिसम्बर, 1857– वीरनारायण सिंह को रायपुर के जयस्तंभ चौक में फांसी दी गयी।

B. छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रथम शहीद हुए।

- वीरनारायण सिंह के पुत्र गोविंद सिंह को गिरफ्तार किया गया था जिसे 1860 में रिहा किया गया।

3. संबलपुर के सुरेन्द्र साय का विद्रोह–

- संबलपुर के जमीदार सुरेन्द्र साय अंग्रेजों से लोहा लेते रायपुर जिले तक आ पहूंचे/गोविंद सिंह, सुरेन्द्र साय से मिलकर महाराज साय से बदला लेता है।
- 23 जनवरी, 1864– सुरेन्द्र साय गिरफ्तार– असीरगढ़ किले में कैद
- 28 फरवरी, 1884– मृत्यु

RAJPUT TUTORIALS

4. **रायपुर में सैन्य विद्रोह**– हनुमान सिंह का शौर्य

- 18 जनवरी, 1858– रायपुर में तीसरी सेना के लश्कर हनुमान सिंह के द्वारा तीसरी टुकडी के सार्जेण्ट मेजर सीडवेल की घर में घुसकर हत्या।
- पुलिस शिविर के सिपाहियों को संबोधित करते हुए विद्रोह में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।
- लेफ्टिनेन्ट सी. बी. एल. स्मिथ ने विद्रोहियों को नियंत्रित करने का प्रयास किया।
- 17 विद्रोही सिपाहियों को गिरफ्तार किया गया।
- हनुमान सिंह फरार हो गए।
- 22 जनवरी, 1858– हनुमान सिंह के 17 साथी सिपाहियों को फांसी दे दी गयी।
- अंग्रेज, हनुमान सिंह को पकडने में असफल हुए।

छत्तीसगढ़ का मंगल पाण्डे

5. **उदयपुर का विद्रोह (1858) – शिवराज सिंह का विद्रोह**

रायपुर – कांग्रेसी (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी)

- सी. एम. ठक्कर
- पं. रविशंकर शुक्ल
- वामनराव लाखे

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन

- **1885**–ए. ओ. ह्यूम के प्रयासों से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना।
- **1889**– कांग्रेस का बम्बई अधिवेशन

छत्तीसगढ़ से इस अधिवेशन में भाग लेने वाले

1. वामनराव लाखे 2. माधवराव सप्रे 3. पं. रामदयाल तिवारी 4. सी. एम. ठक्कर

- **1891**– नागपुर अधिवेशन

छत्तीसगढ़ से इस अधिवेशन में भाग लेने वाले

1. वामनराव लाखे 2. माधवराव सप्रे 3. सी. एम. ठक्कर 4. पं. रामदयाल तिवारी 5. बद्रीनाथ साव

- **1905** – प्रांतीय राजनीतिक परिषद की पहली बैठक नागपुर में आयोजित की गयी।
- **1906** – छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण के प्रणेता पं. सुंदरलाल शर्मा कांग्रेस के सदस्य बने।
- **1906** – प्रांतीय राजनीतिक परिषद की दूसरी बैठक जबलपुर में आयोजित की गयी।
  – इस बैठक में दादा साहब खापर्डे का 'स्वदेशी आंदोलन' विषयक प्रस्ताव पारित हुआ।
- **1906** – सी. एम. ठक्कर के द्वारा छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की स्थापना।
  – कांग्रेस के पहले सदस्य छत्तीसगढ़ से पं. सुंदरलाल शर्मा बनाए गए।
  – पं. सुंदरलाल शर्मा के द्वारा 'सम्मित्र मंडल' की स्थापना।
- 1907 के कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में पं. सुंदरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व किया था।

❖ **29 मार्च 1907**– प्रांतीय राजनीतिक परिषद की तीसरी बैठक रायपुर में आयोजित की गयी।

- अध्यक्ष– श्री केलकर
- स्वागताध्यक्ष– बैरिस्टर हरि सिंह गौर
- रायपुर के इस प्रांतीय अधिवेशन सूरत अधिवेशन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। यहां कांग्रेस दो दलों में बंट गया।

गरम दल	नरम दल
1. दादा साहब खापर्डे	1. बाबू हरि सिंह गौर
2. बैरिस्टर छेदीलाल	2. डॉ. मूंजे
3. ई. राघवेन्द्र राव	3. श्री केलकर
4. पं. रविशंकर शुक्ल	4. डॉ. मधोलकर
5. माधवराव सप्रे	
6. वामनराव लाखे	

RAJPUT TUTORIALS

- **13 अप्रैल, 1907**– तिलक के 'मराठा' और 'केसरी' पत्रिका से प्रेरित होकर माधवराव सप्रे 'हिन्द केसरी' का प्रकाशन शुरू किया।

- **21 अगस्त 1908**– हिन्द केसरी में प्रकाशित लेख 'देश की दुर्दशा' और 'बम भोले का रहस्य' ब्रिटिश शासन का विरोध प्रदर्शित कर रहे थे।
  माधवराव सप्रे गिरफ्तार किए गए।
  2 नवंबर, 1908
  जेल से रिहा किए गए।

- **बिलासपुर में जागृति**
  1. ई. राघवेन्द्र राव 2. बैरिस्टर छेदीलाल 3. कुंज बिहारी अग्निहोत्री

❖ **ई. राघवेन्द्र राव**– (आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले से थे बिलासपुर आकर रहने लगे थे)
- 1906– कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में भाग लिया।
- 1907– सूरत अधिवेशन में बिलासपुर का प्रतिनिधित्व किया।
- नवंबर, 1915– नागपुर के नरम एवं गरम दल के संयुक्त अधिवेशन में मध्यस्थ के रूप में कार्य किया।
- बिलासपुर नगर पालिका के अध्यक्ष रहे।
- बिलासपुर जिला परिषद के सचिव भी निर्वाचित हुए।

❖ **कुंजबिहारी अग्निहोत्री**–
- बिलासपुर में स्थापित होमरूल की शाखा के माध्यम से जनजागृति के कार्य में संलग्न रहे।

❖ **रघुनंदन प्रसाद वर्मा**– बाल समाज पुस्तकालय की स्थापना की

❖ **बैरिस्टर छेदीलाल**– सेवा समिति

❖ **ठाकुर प्यारेलाल सिंह**
- राजनांदगांव में राष्ट्रीय जागृति के अग्रदुत
- 1909 – सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना

- **दुर्ग जिले में जागृति**
  - उदयराम के द्वारा किसान सभा का गठन।
  - गंगा प्रसाद चौबे, गणेश प्रसाद सिंगरौल तथा चंद्रिका प्रसाद पाण्डे के द्वारा विद्यार्थी कांग्रेस की स्थापना की गयी।

- **छत्तीसगढ़ में होमरूल आंदोलन**
  - छत्तीसगढ़ होमरूल लीग के तिलक वाले क्षेत्राधिकार में आता था।
  - 1918 में पं. रविशंकर शुक्ल के द्वारा होमरूल लीग की स्थापना। जिसमें प्रतिनिधित्व रायबहादुर हीरालाल के द्वारा किया गया।
  - छत्तीसगढ़ में होमरूल लीग की सफलता का श्रेय तीन लोगों को है–
    1. मूलचंद बागडी 2. माधवराव सप्रे 3. लक्ष्मण राव उदयगीरकार

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

- **फरवरी, 1919– रोलेट एक्ट और छत्तीसगढ़**
  - कांग्रेस के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन
  - मई, 1919
    - → धमतरी में द्वितीय तहसील राजनीतिक परिषद की बैठक
      - ↓ सभापति– गणेश कृष्ण (दादा साहेब खापर्डे)
    - → जलियावाला बाग हत्याकांड की भर्त्सना की गयी
    - → बैठक में भाग लेने वाले

रायपुर
1. माधवराव सप्रे
2. पं. रविशंकर शुक्ल
3. वामनराव लाखे
4. महंत लक्ष्मीनारायण
5. महंत पुरूषोत्तम दास

बिलासपुर
1. ई. राघवेन्द्र राव
2. कुंजबिहारी अग्निहोत्री
3. पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी

- **1919–1922 (खिलाफत आंदोलन और छत्तीसगढ़)**
  - 17 मार्च, 1920– खिलाफत उपसमिति का गठन
  - 1920

रायपुर
↓ रायपुर जिला कांग्रेस का सम्मेलन
↓ असगर अली ने हिन्दु भाइयों को समर्थन देने के लिए धन्यवाद दिया।

बिलासपुर
↓ बिलासपुर जिला कांग्रेस का सम्मेलन
↓ अध्यक्ष– डॉ. मुंजे

असहयोग आंदोलन और छत्तीसगढ़

26 दिसंबर, 1920 – कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन
– अध्यक्ष– विजय राघवाचारी
– गांधीजी के असहयोग आंदोलन प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गयी।

छत्तीसगढ़ से इस अधिवेशन में भाग लेने वालों में

1. पं. सुंदरलाल शर्मा
2. पं. रविशंकर शुक्ल
3. वामनराव लाखे
4. सी. एम. ठक्कर
5. ठाकुर प्यारे लाल सिंह
6. नारायण राव मेघावले
7. नत्थूजी जगताप
8. छोटेलाल श्रीवास्तव
9. राघवेन्द्र राव
10. बैरिस्टर छेदीलाल
11. नारायण राव दिक्षित

1. **न्यायालयों का बहिष्कार–**

↓ वकालत का परित्याग–
1. पं. रामनारायण तिवारी } [illegible]
2. यादव राव देशमुख }
3. रत्नाकर झा – दुर्ग
4. ई. राघवेन्द्र राव } बिलासपुर
5. बैरिस्टर छेदीलाल }
6. एम. आर. खानखोजे }
7. डी. के मेहता }

8. ठा. प्यारेलाल सिंह
9. पं. बलदेव प्रसाद मिश्र
10. गोवर्धन लाल श्रीवास्तव

} राजनांदगांव

2. उपाधियों का त्याग–

राय साहब की उपाधि त्यागने वाले → वामनराव लाखे (जनता के द्वारा लोकप्रिय की उपाधि)
→ सेठ गोपीकिशन
→ कल्याणजी
→ मोरारजी ढैकर

खान साहब की उपाधि का त्याग– काजी शेर खाँ
राय बहादुर की उपाधि का त्याग – नगेन्द्र नाथ डे

3. कौंसिल एवं चुनाव का बहिष्कार

- कौंसिलों के बहिष्कार के अंतर्गत विधान परिषद एवं जिला परिषदों के साथ असहयोग किया गया।
- रायपुर जिला परिषद के सदस्य यादवराव देशमुख ने परिषद का बहिष्कार किया।
- इसी समय अंग्रेजी शासन ने धारा सभा (प्रांतीय विधान सभा) के गठन की प्रक्रिया 1921 में प्रारंभ की।
- धारा सभा के चुनाव का बहिष्कार किया गया।
- पूर्व धारा सभा हेतू निर्वाचित बाजीराव कृदन्त ने त्यागपत्र दिया।
- दिसंबर, 1921 में पुनः चुनाव– रायपुर से दो प्रतिनिधि चुने गए

फगुआ रोहिदास
(रायपुर–बलौदाबाजार से)

बाजीराव कृदत्त
(धमतरी–महासमुंद क्षेत्र से)
→ गांधीजी की गिरफ्तारी से आहत होकर इस्तीफा दिया

4. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी का प्रचार

- **रचानात्मक कार्य**

1. राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना

- 5 फरवरी, 1921 को माधवराव सप्रे के संचालन में एक जनसभा हुई जिसमें राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हेतु 10 हजार की राशि एकत्रित की गई।
- रायपुर– राष्ट्रीय विद्यालय– → भवन– सेठ गोपी किशन
  → संचालन– वामनराव लाखे
  → अध्यापक– रामनारायण तिवारी
- धमतरी– छोटेलाल श्रीवास्तव
- बिलासपुर– ब्रदीनाथ साव (अध्यापकः– यदुनंदन प्रसाद श्रीवास्तव)

2. राष्ट्रीय पंचायत– रायपुर में 4 मार्च, 1921 – पंचायत मंत्री सेठ जसकरण डागा
→ 15 अक्टुबर, 1931 तक
– धमतरी– फरवरी, 1921 – बाजीराव कृदत्त के मकान में पंचायती अदालत शुरू किया गया।

3. मद्य निषेध कार्यक्रम – पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा चलाया गया।

विद्याजतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

- **1921 में राष्ट्रीय नेताओं का रायपुर आगमन**– 1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 2. सुभद्रा कुमारी चौहान

12 मई, 1921 – कर्मवीर के संपादक माखनलाल चतुर्वेदी की गिरफ्तारी, राजद्रोह के आरोप में की गयी।
– 4 मार्च, 1922 को रिहा हुए।
– अपने भाषण में कहा था– '' आज जिस तरह से ब्रिटिश बिजली ठप पड़ गयी है एक दिन इसी तरह से ब्रिटिश शासन की ठप पड़ जाएगी।''

- **रायपुर जिला राजनीतिक परिषद सम्मेलन (1922)**
  - 25 मार्च, 1922 / 22 मई, 1922 ⟶ डिप्टी कमीश्नर– क्लार्क
    (RHGA के अनुसार) (अन्य) ⟶ पुलिस कप्तान– जोन्स
  - अध्यक्ष – यू. बी. घाटे
  - स्वागत अध्यक्ष– पं. रविशंकर शुक्ल
  - इस सम्मेलन में पुलिस से टकराव हुआ था।

- **11 फरवरी, 1922**– असहयोग आंदोलन की समाप्ति
  ↓
  छत्तीसगढ़ से पं. सुंदरलाल शर्मा एवं नारायण राव गिरफ्तार किए गए।

- **स्वराज दल और छत्तीसगढ़ (1923)**

  1 जनवरी, 1923
  (चितरंजन दास)
  ↓
  1925 में मृत्यु
  1926 में स्वराज दल का अस्तित्व समाप्त

  स्वराज दल के कार्यकर्ता
  1. ई. राघवेन्द्र राव
  2. बैरिस्टर छेदीलाल
  3. पं. रविशंकर शुक्ल

- **झंडा सत्याग्रह (1923) (चरखा युक्त तिरंगा)**
  - जबलपुर से शुरू होकर नागपुर तक
  - पं. सुंदरलाल शर्मा की गिरफ्तारी जबलपुर में
  - झंडा सत्याग्रह में शामिल होने धमतरी से पैदल नागपुर जाने वाले–
    1. श्यामलाल सोम 2. परदेशी राम ध्रुव 3. विशम्भर लाल पटेल
    धमतरी तहसील ने झंडा सत्याग्रह में विशेष योगदान दिया।

- **काकीनाड़ा अधिवेशन और छत्तीसगढ़ से पैदल यात्रा (1923)**
  - काकीनाड़ा (आंध्रप्रदेश)
  - यह अधिवेशन प्रमुख रूप से अछुतोध्दार का मामला उठाया गया।
  - धमतरी से बस्तर होते हुए काकीनाडा तक पैदल यात्रा।
  - नेतृत्वकर्ता– नारायण राव मेघावले

- पं. सुंदरलाल शर्मा के प्रयासों से रायपुर में सतनामी आश्रम, हरिजन पुत्रीशाला छात्रावास एवं वाचनालय स्थापित हुए।
  - ⟶ मंदिरों में हरिजन प्रवेश के समर्थक
  - ⟶ गांधीजी से पहले अछूतोध्दार का कार्य शुरू किया इसके लिए गांधीजी ने अपने द्वितीय छत्तीसगढ़ आगमन पर पं. सुंदरलाल शर्मा को अपना गुरू कहकर सम्मानित किया।
  - ⟶ राजिम के मंदिर में हरिजन प्रवेश को संभव कर दिखाया था। (रामचन्द्र मंदिर)
  - ⟶ कृति– सतनामी भजनमाला

1928 में साइमन कमीशन का विरोध छत्तीसगढ़ के रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर जिलों में हुआ।

- **प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन**
  - 12 मार्च, 1930– दांडी यात्रा।
  - 6 अप्रैल, 1930– नमक कानून तोड़ा गया

8 अगस्त, 1930
↓
क्रांति कुमार भारती ने बिलासपुर टाउन हाल में झंडा फहराया।

- **छत्तीसगढ़ में आंदोलन**
  - 6 अप्रैल, 1930 – 13 अप्रैल 1930 राष्ट्रीय सप्ताह के रूप में मनाया गया।
  - नमक कानून → पं. रविशंकर शुक्ल के द्वारा तोड़ा गया। (रायपुर में)
    → धमतरी में नारायणराव मेघावले
  - बिलासपुर में दिवाकर कार्लीकर के द्वारा शराब की दुकान पर धरना दिया गया।
  - दुर्ग में नरसिंह प्रसाद अग्रवाल ने जनता को सरकारी कानून के उल्लंघन के लिए प्रेरित किया।
  - मुंगेली में रामगोपाल तिवारी और कालीचरण शुक्ल ने नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा।
  - अवज्ञा के पांच पाण्डव–
    → धर्मराज युधिष्ठीर– वामनराव लाखे
    → भीम– महंत लक्ष्मीनारायण दास
    → अर्जुन– ठाकुर प्यारे लाल सिंह
    → नकुल– मौलाना अब्दुल रऊफ
    → सहदेव– शिवदास डागा

वानर सेना का गठन–
→ बिलासपुर– वासुदेव देवरस
→ रायपुर– बालक बलिराम आजाद (1932 में) + रामाधार नाईक

- **सविनय अवज्ञा आंदोलन का द्वितीय चरण–**

भारत में– 4 जनवरी, 1932 – गांधीजी   समाप्ति – 7 अप्रैल, 1934

छत्तीसगढ़ में– 14 जनवरी, 1932 – पं. रविशंकर शुक्ल

29 जनवरी, 1932 – पेशावर दिवस

1. **गांधीजी की द्वितीय छत्तीसगढ़ यात्रा**– उद्देश्य– "हरिजन उत्थान"
   - 22–26 नवंबर, 1933 (5 दिन)
   - 22 नवंबर, 1933– दुर्ग आए
   - साथी– मीरा बेन, ठक्कर बापा, निजी सचिव– महादेव देसाई, जमुनालाल बजाज की पुत्री
   - गांधीजी के कार का ड्राइवर– श्री हजारीलाल जैन
   - रायपुर में पं. रविशंकर शुक्ल के निवास पर रूके थे।
   - 25 नवंबर, 1933– धमतरी से बिलासपुर
   - 1935– मध्यप्रांत के विधानसभा चुनाव में रायपुर से ठाकुर प्यारे लाल सिंह निर्वाचित हुए।
   - 1935– बरार को मध्यप्रांत में शामिल किया गया।
   - 1936– ई. राघवेन्द्र राव को मध्यप्रांत एवं बरार का गवर्नर नियुक्त किया गया।
   - 1935– भारत शासन अधिनियम
   - 1937– 11 प्रांतों में चुनाव– 06 में कांग्रेस पूर्ण बहुमत में आयी।
     – लेकिन 8 में कांग्रेस की सरकार
   - 4 जुलाई, 1937– मध्यप्रांत एवं बरार मंत्री मण्डल

     प्रधानमंत्री– नारायण भास्कर खरे (वर्तमान में जिसे मुख्यमंत्री कहा जाता है।)
     शिक्षामंत्री– पं. रविशंकर शुक्ल (रायपुर से निर्वाचित)
     गवर्नर – ई. राघवेन्द्र राव (बिलासपुर से)
     व्यवस्थापिका सभा के अध्यक्ष – घनश्याम सिंह गुप्त (दुर्ग से)
   - 29 जुलाई, 1937– पं. रविशंकर शुक्ल (प्रधानमंत्री)
   - 23 अक्टूबर, 1939– कांग्रेस मंत्रीमण्डल का त्याग पत्र

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

- **व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)**
  - भारत के पहले व्यक्तिगत सत्याग्रही – अक्टूबर, 1940– विनोबा भावे
  - छत्तीसगढ़ के पहले व्यक्तिगत सत्याग्रही– 27 नवंबर, 1940 – पं. रविशंकर शुक्ल (रायपुर से)

- **भारत छोड़ो आंदोलन (1942)**
  - ई. राघवेन्द्रराव भारत सरकार (वायसराय की कौंसिल में) के गृह रक्षा सदस्य थे और क्रिप्स योजना को असफल बनाने में इनका बड़ा योगदान था।
  - 8 अगस्त, 1942– बम्बई अधिवेशन – 14 जुलाई, 1942
    - ↓ गांधीजी के द्वारा 'करो या मरो' का नारा दिया गया
    - ↑ वर्धा प्रस्ताव
    - ↓ आपरेशन जीरो आवर चलाया गया।

- **मलकापुर की घटना**
  - ↓

8 अगस्त, 1942– भारत छोड़ो आंदोलन के बम्बई अधिवेशन में भाग लेने गए छत्तीसगढ़ के नेताओं को मलकापुर में गिरफ्तार किया गया। जिनमें शामिल थे।

1. पं. रविशंकर शुक्ल 2. खूबचंद बघेल 3. बैरिस्टर छेदीलाल 4. महंत लक्ष्मीनारायण दास
5. पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र

- **रायपुर में प्रभाव**– 9 अगस्त, 1942 और 10 अगस्त, 1942– छत्तीसगढ़ में भारत छोड़ो आंदोलन के लिए रायपुर में रैली निकली गयी।
  1. श्री त्रेतानाथ तिवारी (नेतृत्वकर्ता) 2. रणवीर सिंह शास्त्री
  3. जय प्रकाश पाण्डे 4. कमलनारायण शर्मा

- **रायपुर षडयंत्र केस (1942)**
  - परसराम सोनी– 15 जुलाई, 1942 गिरफ्तार, 26 जून, 1946 रिहा
  - मुखबिरी – शिवनंदन

- **रायपुर डायनामाइट कांड (1942)**
  - बिलखनारायण अग्रवाल (जबलपुर से)
  - साथी– 1. ईश्वरीचरण शुक्ल 2. नागरदास बावरिया 3. नारायणदास राठौर 4. जयनारायण पाण्डे

- **1942 की अन्य घटना**
  - बिलासपुर से कालीचरण गिरफ्तार
  - दुर्ग कचहरी में आग लगा देने के कारण रघुनंदन सिंगरौल गिरफ्तार

- **केबिनेट मिशन (1946)**
  - संविधान निर्माण सभा में छत्तीसगढ़ से चुने गए व्यक्ति (गैर रियासती क्षेत्रों से)
    1. घनश्याम सिंह गुप्त (हिन्दी प्रारूप समिति के अध्यक्ष)
    2. पं. रविशंकर शुक्ल 3. बैरिस्टर छेदीलाल

- **दूसरा आम चुनाव** (11 में से 9 में कांग्रेस) (लाहौर और सिंध में मुस्लिम लीग आया)
  - 27 अप्रैल, 1946– पं. रविशंकर शुक्ल दूसरी बार मध्यप्रांत एवं बरार के प्रधानमंत्री बने।
  - 3 जून, 1947– माउण्टबेटन योजना (एटली का घोषणा पत्र– 20 फरवरी, 1947)
  - जुलाई, 1947– भारत स्वतंत्रता अधिनियम

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

- **छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता दिवस समारोह (15 अगस्त 1947) (ध्वजारोहण)–**
  - नागपुर (सीताबर्डी)– पं. रविशंकर शुक्ल (मध्यप्रांत और बरार के पहले...)
  - रायपुर– खाद्य मंत्री आर. के. पाटिल → रायपुर के पुलिस लाईन में गांधीजी और नेहरू जी के राष्ट्र के नाम संदेश को पढ़कर सुनाया।
  - दुर्ग– घनश्याम सिंह गुप्त
  - बिलासपुर– पं. राम गोपाल तिवारी

छत्तीसगढ़ में मजदूर आंदोलन

- वर्तमान राजनांदगांव ब्रिटिश शासनकाल में एक सामंती रियासत था।
- राजनांदगांव मजदूर आंदोलन के लिए प्रसिद्ध रहा है।
- 23 जून 1892– रियासत के राजा बलराम दास के द्वारा सी. पी. मिल्स की स्थापना।
- 1897– कलकत्ता की शॉ वालेश कंपनी ने सी. पी. मिल्स को खरीदकर उसका नाम बदलकर बंगाल नागपुर कॉटन मिल रखा।

- **प्रथम बी. एन. सी. मिल मजदूर आंदोलन (अप्रैल, 1920)**
  - नेतृत्वकर्ता– ठाकुर प्यारेलाल सिंह
  - सहयोगी– शिवलाल मास्टर, शंकर खरे, राजुलाल शर्मा
  - कारण– मिल मजदूरों का प्रतिदिन 12–13 घंटे कार्य
  - कुछ दिनों तक चलने वाली यह एक लंबी हड़ताल थी।
  - सन् 1920 का यह मजदूर आंदोलन देश में हुई पहली और सबसे बड़ी हड़ताल थी इसमें अंततः मजदूरों की विजय हुई।
  - आंदोलन के समय राजनांदगांव के पॉलिटिकल एजेंट एफ. एल. ग्रेफोर्ड थे।

- **द्वितीय बी. एन. सी. मिल मजदूर आंदोलन (जनवरी, 1924)**
  - हिंसात्मक मजदूर आंदोलन
  - जरहू गोंड की मृत्यु
  - ठाकुर प्यारेलाल सिंह को राजनांदगांव से निष्कासित किया गया।
  - निष्कासन के पश्चात् उनके साथी राजूलाल शर्मा, शिवलाल मास्टर ने आंदोलन को जारी रखा।
  - यह मजदूर आंदोलन लगभग एक वर्ष तक चला।

- **तृतीय मजदूर आंदोलन (1936–37)**
  - कारण– मजदूरों के वेतन में 10% से 50% तक कटौती
  - नेता– नागपुर के प्रसिद्ध मजदूर नेता रामचंद्र सखाराम रूईकर (ठा. प्यारेलाल)
  - मजदूरों की 20 में से 9 मांगे मानी गयी।
  - मजदूरों की मांगों के लिए ''जैक्शन आयोग' का गठन।

- **मजदूर आंदोलन (1938)**
  - जैक्शन आयोग की रिपोर्ट पर मैनेजमेण्ट ने स्थान नहीं दिया।
  - मजदूरों के लिए वेलफेयर आफिसर की नियुक्ति की गई।
    - के. एल. शुक्ला
  - के. एल. शुक्ला के द्वारा 400 मजदूरों को निकाला गया।
  - शॉ वालेश कंपनी का बहिष्कार किया गया।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

किसान आंदोलन

1. राजनांदगांव में बेगार विरोधी आंदोलन (1879)

- राजनांदगांव को सामंती राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।
- महंत घासीदास अंग्रेजों की सत्ता प्रतिनिधि नियुक्त किए गए।
- राजनांदगांव नगर बना और गांवों में बेगारी बढ़ी।
- किसान बेगारी से त्रस्त होने लगे।
- इस बेगारी के खिलाफ सेवता ठाकुर ने आवाज बुलंद की लेकिन कंपनी प्रशासन की मदद से उसका विरोध कुचर दिया गया।

2. कंडेल गांव का नहर सत्याग्रह (1920)

- जुलाई, 1920– दिसंबर, 1920
- नेतृत्वकर्ता– पं. सुंदरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले, छोटे लाल श्रीवास्तव
- 20–21 दिसंबर, 1920– गांधीजी का प्रथम छत्तीसगढ़ आगमन + शौकत अली

  ↓ रायपुर ↘ धमतरी

3. डौण्डीलोहारा का किसान आंदोलन (1936–37)

- नेतृत्वकर्ता – नरसिंह प्रसाद अग्रवाल और सरयु प्रसाद अग्रवाल
- कारण– चरी–निस्तारी का विरोध (किसानों को जंगल में लकडी काटने से रोका गया।)
- परिणाम– चरी–निस्तारी अधिकार कानून बनाया गया।

4. छुईखदान रियासत में लगान बंदी आंदोलन (1939)

- अंग्रेज भक्त छुईखदान के दीवान की शोषणकारी नीति से किसानों में असंतोष था।
- खैरा नर्मदा में रामनारायण मिश्र (हर्षुल) के नेतृत्व में किसानों की आमसभा हुई।
- छुईखदान का लगानबंदी आंदोलन एक अहिंसात्मक आंदोलन था इसकी तुलना 'बारदोली सत्याग्रह' से की जा सकती है।
- गांधीजी के परामर्श से यह आंदोलन स्थगित कर दिया गया।

5. कांकेर का किसान आंदोलन (1944–45)

- कारण– I– कांकेर रियासत के दीवान जे. एन. महंत को हटाकर टी. महापात्र को दीवान बनाना।

  II– नवीन भू–बंदोबस्त लागू करना।

  (भू–बंदोबस्त →) राजस्व वसूली ठेका प्रणाली से की जाने लगी।
- नेतृत्वकर्ता– इंदरू केंवट
- सहयोगी– गुलाब हटना, कंगलू कुम्हार

6. किसान सभा का गठन (1946)

- छुईखदान में
- दामोदर लाल दादरिया, अमृतलाल दादरिया, समारूराम महोबिया
- पूजनमचंद जी सांखला

7. सक्ती में किसान आंदोलन (1947)

- नेतृत्वकर्ता– लीलाधर सिंह
- इस रियासत का भारत संघ में विलय होने के पश्चात भी यहां किसानों का आंदोलन जारी था।

जंगल सत्याग्रह

1. 21 जनवरी, 1922 – सिहावा (धमतरी)– पं. सुंदरलाल शर्मा, नारायणराव मेघावाले, छोटेलाल श्रीवास्तव
2. जुलाई, 1930 – गट्टासिल्ली (धमतरी)– नारायण राव मेघावाले, नत्थुजी जगताप, छोटेलाल श्रीवास्तव
3. 24 जुलाई, 1930 – मोहसिना पोंडी (दुर्ग)– नरसिंह प्रसाद अग्रवाल
4. 22 अगस्त, 1930 – रूद्री नवागांव (धमतरी)– छोटेलाल श्रीवास्तव
5. 8 सितंबर, 1930 – लभरा (महासमुंद)– अरिमर्दन गिरि

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

6. 9 सितंबर, 1930 – तमोरा (महाससमुंद)– यतियतनलाल, शंकरराव, गनौंदवाले, दयावती
7. – पोंडी (सीपत, बिलासपुर)– रामाधार दुबे
8. – बांधाखार (कोरबा)– मनोहर शुक्ला
9. 1938 – छुईखदान (राजनांदगांव)– समारूबरई
10. 1939 – बदराटोला (राजनांदगांव) – रामधीन गोंड शहीद हुए थे।